PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Navbharat Times, Delhi
Tuesday, 5th October 2010, Page: 6
Width: 10.37 cms Height: 17.23 cms, Ref: pmin.2010-10-05.29.23

कैंसर के इलाज में हुई मार्फिन की वकालत

डब्ल्यूएचओ की नई गाइडलाइंस

23-6

वरिष्ठ संवाददाता ॥ नई दिल्ली

कैंसर मरीजों के लिए मार्फिन उम्मीद की नई किरण बन गई है। वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन (डब्ल्यूएचओ) की नई गाइडलाइंस में इस्तेमाल को मिली मंजूरी के बाद एम्स सहित कई हॉस्पिटल कैंसर मरीजों को दर्द से निजात दिलाने के लिए इसका इस्तेमाल कर रहे हैं। इतना ही नहीं, एक साल की स्टडी के बाद डॉक्टरों का कहना है कि इससे मरीजों की लाइफ क्वॉलिटी में भी सुधार देखा गया है।

एम्स के इंस्टिट्यूट ऑफ रोटरी कैंसर हॉस्पिटल (आईआरसीएच) के अध्यक्ष डॉ. जी. के. रथ ने बताया कि कैंसर मरीजों में संक्रमण वाली जगह पर एक रिसेप्टर विकसित हो जाता है। ऐसे में मार्फिन का पूरा असर रिसेप्टर पर होता है और बाकी अंग साइड इफेक्ट से बच जाते हैं। इसी के आधार पर डब्ल्यूएचओ ने कैंसर मरीजों पर इसके इस्तेमाल को सुरक्षित माना है। 5 मिग्रा प्रति चार घंटे से शुरू करके मार्फिन की टेबलेट को 800 एमजी प्रति चार घंटे तक दिया जा सकता है। इससे 90 परसेंट मरीजों को दर्द से राहत मिल सकती सकती है।

बाकी मरीजों को इंटरवेंशनल थैरेपी से दर्द की जगह पर सीधे इंजेक्शन या पाइप के जरिए मार्फिन की डोज देकर उसकी जिंदगी को आसान बनाया जा सकता है। इस थैरेपी में 300 मिग्रा की जगह एक मिग्रा दवा से भी काम हो जाता है। हालांकि डोज विशेषज्ञ की देखरेख में ही ली जानी चाहिए।

> **कैंसर मरीजों में संक्रमण वाली जगह पर एक रिसेप्टर विकसित हो जाता है। ऐसे में मार्फिन का पूरा असर रिसेप्टर पर होता है और बाकी अंग साइड इफेक्ट से बच जाते हैं।**
>
> *- डॉ. जी. के. रथ, अध्यक्ष, आईआरसीएच, एम्स*

आईआरसीएच की एनेस्थीसियॉलजी एंड पेन केयर इंस्टिट्यूट की प्रमुख डॉ. सुषमा भटनागर ने बताया कि अभी ज्यादातर लोगों में यह भ्रम है कि मार्फिन अफीम से बनती है इसलिए इसकी लत हो सकती है। इसके साइड इफेक्ट काफी ज्यादा हैं। इसके साथ ही डॉक्टरों में भी इस बारे में जानकारी का अभाव है। यही वजह है कि देश के दस लाख मरीजों में से अभी तक सिर्फ तीन परसेंट को ही फायदा हो रहा है। उन्होंने बताया कि एम्स के विशेष क्लिनिक में जहां कैंसर मरीजों को मार्फिन की ओरल डोज फ्री दी जाती है और एक एनजीओ की मदद से उनकी रेग्युलर मॉनिटरिंग भी की जाती है। राजीव गांधी कैंसर इंस्टिट्यूट के डॉ. सुधीर रावल कहते हैं कि देश में 90 पर्सेंट कैंसर मरीज बीमारी के एडवांस स्टेज में हॉस्पिटल पहुंचते हैं, जिनमें से 90 पर्सेंट का कोई इलाज नहीं हो सकता है, लेकिन उन्हें दर्द असहनीय होता है।

डब्ल्यूएचओ के आंकड़ों के मुताबिक 25 परसेंट कैंसर मरीजों की मौत दर्द के कारण होती है। इन मरीजों को दर्द से राहत दिलाने के लिए डब्ल्यूएचओ ने 1986 में ही पेन मैनेजमेंट मॉडल तैयार किया था, मगर इस बारे में अस्पतालों में जागरूकता अब धीरे- धीरे पहुंच रही है।

Copy

Misc

11